BSEH Marking Scheme (March 2024)

Code : D

खंड- क (वस्तुनिष्ठ प्रश्न) 1×21=21

Section-A (Objective Questions)

प्रश्न 1. (स)बनावली

प्रश्न 2. (ब)धोलावीरा

प्रश्न 3. (अ)बिंबिसार

प्रश्न 4. (अ)मथुरा

प्रश्न 5. (द)चंद्रगुप्त द्वितीय

प्रश्न 6. (स)दारा शिकोह

प्रश्न 7. (ब)नयनार

प्रश्न 8. (अ) 1916

प्रश्न 9. पाणिनि

प्रश्न 10. आंध्र प्रदेश

प्रश्न 11. 1986

प्रश्न 12. 85%

प्रश्न 13. 1923, चितरंजन दास

प्रश्न 14. महात्मा गाँधी

प्रश्न 15. भीमराव अंबेडकर

Download from www.MsEducationTv.com

प्रश्न 16. उड़ीसा

प्रश्न 17. दावा

प्रश्न 18. मद्रास

प्रश्न 19. अ

प्रश्न 20. ब

प्रश्न 21. द

Question 1 (c) Banawli

Question 2. (b) Dholawira

Question 3. (a) Bimbisar

Question 4. (A) Mathura

Question 5. (d) Chandragupta- II

Question 6. (c) Dara Shikoh

Question 7. (b) Naynar

Question 8. (a) 1916

Question 9. Panini

Question 10. Andhra Pradesh

Question 11. 1986

Question 12. 85%

Question 13. 1923, Chittaranjan Das

Question 14. Mahatma Gandhi

Question 15. Bhim Rao Ambedkar

Question 16. Orissa

Question 17. Dawa

Question 18. Madras

Download from www.MsEducationTv.com

Question 19. A

Question 20. B

Question 21. D

खंड - ख (लघु उत्तरीय प्रश्न) **3×6=18**

Section-B (Short Answer Questions)

प्रश्न 22. (i) महायान सम्प्रदाय के ग्रन्थ संस्कृत भाषा में है जबकि हीनयान सम्प्रदाय के ग्रन्थ पालि भाषा में है।

(ii) महायान सम्प्रदाय में मूर्ति पूजा आरम्भ हो गई जबकि हीनयान सम्प्रदाय में गौतम बुद्ध को आदर्श और पवित्रता का प्रतीक पुरुष माना गया।

(iii) महायान बौद्ध धर्म का नूतन सम्प्रदाय है जबकि हीनयान बौद्ध धर्म का प्राचीन सम्प्रदाय है।

(i) The texts of Mahayana sect are in Sanskrit language whereas the texts of Hinayana sect are in Pali language.

(ii) Idol worship started in the Mahayana sect, whereas in the Hinayana sect, Gautam Buddha was considered the epitome of wisdom and purity.

(iii) Sahayana is a new sect of Buddhism while Hinayana is an ancient sect of Buddhism.

अथवा/or

त्रिरत्न एक संस्कृत शब्द है, जिसका शब्दिक अर्थ है- तीन रत्न। जैन धर्म में सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान तथा सम्यक चरित्र को त्रिरत्न कहा जाता है। जैन धर्म में निर्वाण त्रिरत्न की सहायता से प्राप्त किया जा सकता है।

इनके अर्थ का वर्णन इस प्रकार है-

(i) सम्यक दर्शन यथार्थ ज्ञान के प्रति श्रद्धा रखना।

(ii) सम्यक ज्ञान सत्यत था असत्य का ज्ञान ही सम्यक ज्ञान है।

Download from www.MsEducationTv.com

(iii) सम्यक चरित्र हितकारी कार्यों का आचरण ही सम्यक चरित्र है।

Triratna is a Sanskrit word, which literally means three gems. In Jainism, right philosophy, right knowledge and right character are called three gems. In Jainism, creation can be achieved with the help of triratna.

The description of their meaning is as follows-

(i) Samyak Darshan: Having faith in true knowledge.

(ii) Right Knowledge: Knowing the difference between truth and falsehood is right knowledge.

(II) Right character is conduct of beneficial activities.

प्रश्न 23. भारत में परिवार व्यवस्था की विशेषताएँ निम्नलिखित है-

(i) भारत में संयुक्त परिवार व्यवस्था प्रचलित थी।

(ii) परिवार का सर्वाधिक बुजुर्ग व्यक्ति घर का मुखिया होता है।

(ii) परिवार के सभी सदस्यों के उत्तरदायित्व निर्धारित होते हैं।

(iv) परिवार मुख्यतः पुरुष प्रधान होते है।

Following are the characteristics of family system in India:

(i) Joint family system was prevalent in India.

(ii) The oldest person in the family is the head of the household.

(iii) Responsibilities of all the members of the family are determined.

(iv) Families are mainly male headed.

प्रश्न 24. संत कबीर का साहित्य तीन परिपार्टियों में संकलित है जिसका वर्णन इस प्रकार है-

(i) कबीर बीजक -कबीर पंथियों द्वारा वाराणसी तथा उत्तर प्रदेश के अन्य स्थानों पर संरक्षित है।

(ii) कबीर ग्रंथावली- इसका संबंध राजस्थान के दादू पथियों से है।

Download from www.MsEducationTv.com

(iii) आदिग्रंथ साहिब -कबीर के कई पद आदिग्रंथ साहिब में भी संकलित किए गए है।

कबीर की रचनाएँ अनेक भाषाओं और बोलियों में मिलती है। इनमें से कुछ निर्गुण संत भाषा में है तथा कुछ रचनाएँ उल्टबाँसी के नाम से जानी जाती है।

The literature of Saint Kabir is compiled in three parts, the description of which is as follows:

(i) Kabir Bijak – is preserved by Kabir Panthis in Varanasi and other places of Uttar Pradesh.

(ii) Kabir Granthawali- It is related to Dadu Pathis of Rajasthan.

(iii) Adi Granth Sahib: Many verses of Kabir have also been compiled in Adi Granth Sahib.

Kabir's works are found in many languages and dialects. Some of these are in Nirgun Sant language and some compositions are known as Ultbansi.

प्रश्न 25. स्थायी बंदोबस्त अथवा इस्तमरारी व्यवस्था 1793 ई. में लॉर्ड कार्नवालिस द्वारा बंगाल में लागू किया गया था। आरम्भ में यह बंगाल के राजाओं तथा ताल्लुकदारों के साथ किया गया जिन्हें बाद में जमींदार के रूप में जाना गया। इस व्यवस्था में जमींदारों को कंपनी को एक निश्चित भूमिकर एक निश्चित समय में देना होता था। यदि कोई जमींदार अपना भूमिकर समय पर जमा नहीं करा पाता था तो उसकी जमींदारी नीलाम कर दी जाती थी। यह व्यवस्था बंगाल, बिहार, उड़ीसा आदि क्षेत्रों में लागू हुई थी। यह औपनिवेशिक शासन की 19 प्रतिशत भूमि पर लागू होता था।

The Permanent Settlement or Istamari system was implemented in Bengal by Lord Cornwallis in 1793 AD. Initially this was done with the kings and taluqdars of Bengal who later came to be known as zamindars. In this system, the landlords had to pay a fixed land tax to the company at a fixed time. If a landlord could not deposit his land tax on time, his land was

Download from www.MsEducationTv.com

auctioned. This system was implemented in areas like Bengal, Bihar, Orissa etc. This applied to 19 percent of the land under colonial rule.

प्रश्न 26. 1918 ई. में अहमदाबाद की एक सूती कपड़ा मिल के मजदूरों ने बोनस को लेकर एक हड़ताल का आयोजन किया। महात्मा गाँधी जी द्वारा इस हड़ताल का नेतृत्व किया गया। गाँधी जी ने खुद भी इस हड़ताल में पहली बार अनशन रखा। मजबूर होकर मिल मालिक मजदूरों से समझौता करने के लिए तैयार हो गए तथा मजदूरों को 35 प्रतिशत भत्ता देने की घोषणा कर दी जिससे हड़ताल समाप्त हो गई। चम्पारण के बाद यह गांधी जी का भारत में दूसरा सफल सत्याग्रह था।

In 1918, workers of a cotton textile mill in Ahmedabad organized a strike regarding bonus. This strike was led by Mahatma Gandhi. Gandhiji himself fasted for the first time during this strike. The mill owners were forced to compromise with the workers and announced 35 percent allowance to the workers, ending the strike. After Champaran, this was Gandhiji's second successful Satyagraha in India.

प्रश्न 27. भारतीय संविधान में निम्न मौलिक अधिकारों को दिया गया है-

(i) समानता का अधिकार ।

(ii) स्वतंत्रता का अधिकार।

(iii) धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार ।

(iv) शोषण के विरुद्ध अधिकार ।

(v) सांस्कृतिक तथा शैक्षणिक अधिकार।

(vi) संवैधानिक उपचारों का अधिकार।

The following fundamental rights have been given in the Indian Constitution-

(i) Right to equality.
(ii) Right to freedom.
(iii) Right to religious freedom.

Download from www.MsEducationTv.com

(iv) Right against exploitation.
(v) Cultural and educational rights
(vi) Right to constitutional remedies.

अथवा/or

भारतीय संविधान 26 जनवरी 1950 से लागू हुआ। इसकी मुख्य विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

(i) लिखित एवं विस्तृत संविधान-भारतीय संविधान एक लिखित संविधान है। इसमें कुल 395 अनुच्छेद तथा 12 अनुसूचियाँ हैं। भारत का संविधान विश्व का सबसे विस्तृत संविधान है।

(ii) मौलिकअधिकार- भारतीय संविधान में लोगों को अपने सर्वांगीण विकास के लिए छः मौलिक अधिकार प्रदान किए गए हैं।

(iii) धर्म निरपेक्ष राज्य- संविधान की प्रस्तावना में भारत को धर्म-निरपेक्ष गणराज्य घोषित किया गया है। संविधान ने किसी विशेष धर्म को राज्य-धर्म का दर्जा नहीं दिया है तथा सभी धर्मों के लोगों को समान माना है।

(iv) व्यस्क मताधिकार भारतीय संविधान में प्रत्येक भारतीय नागरिक को जिसकी आयु 18 वर्ष अथवा इससे अधिक है, बिना किसी भेदभाव के मताधिकार दिया गया है।

The Indian Constitution came into force on 26 January 1950. Its main features are as follows-

(i) Written and detailed constitution: Indian Constitution is a written constitution. It has a total of 395 articles and 12 schedules. The Constitution of India is the most comprehensive constitution in the world.

(ii) Fundamental Rights: In the Indian Constitution, six fundamental rights have been provided to the people for their all-round development.

(iii) Secular State: India has been declared a secular republic in the Preamble of the Constitution. The Constitution has not given the status of state religion to any particular religion and has considered people of all religions equal.

Download from www.MsEducationTv.com

(iv) Adult franchise: In the Indian Constitution, every Indian citizen who is 18 years of age or above has been given the right to vote without any discrimination.

खंड-ग(स्रोत आधारित प्रश्न) **3×4=12**

Section-c Source Based Question

प्रश्न 28. 1.सोवियत संघ

2. 1936 ई.

3. (i) जयप्रकाश नारायण (ii) नरेन्द्र देव ।

1. Soviet Union

2. 1936 AD

3. (i) Jaiprakash Narayan (ii) Narendra Dev.

प्रश्न 29. 1.डोमिंगो पेस पुर्तगाल का एक यात्री था जिसने 1520 के आसपास विजयनगर साम्राज्य की यात्रा की थी।

2. विजयनगर शहर का।

3. डोमिंगो पेस के अनुसार विजयनगर शहर कई पर्वत श्रृंखलाओं बीच स्थित है। इसमें अत्यंत सुंदर उपवन हैं एवं कई स्थानों पर झीलें है तथा राजा के महल के पास ही खजूर के पेड़ों का बगीचा है।

1. Domingo Paes was a Portuguese traveler who visited the Vijayanagara Empire around 1520.

2. Vijayanagar city

3. According to Domingo Paes, the city of Vijayanagara is situated between several mountain ranges. It has very beautiful gardens and

There are lakes at many places and there is a garden of palm trees near the king's palace.

Download from www.MsEducationTv.com

प्रश्न 30.

1. प्रभावतीगुप्त गुप्त शासक चन्द्रगुप्त द्वितीय की पुत्री थी।
2. प्रभावती गुप्त ने गाँव के वासियों, कृषकों एवं ब्राह्मणों को आचार्य चनालस्वामी के सभी आदेशों का पालन करनेका आदेश दिया था।
3. 'अग्रहार' धार्मिक कार्यों हेतू दान में दी गई भूमि होती थी। यह भूमिकर मुक्त होती थी।

1. Prabhavati Gupta was the daughter of the Gupta ruler Chandragupta II.
2. Prabhavati Gupta asked the village residents, farmers and Brahmins to follow all the orders of Acharya Chanalaswami Was ordered to do.
4. 'Agrahar' was land donated for religious purposes. This land was tax free.

खंड-घ (निबंधात्मक प्रश्न) **3×8=24**

Section-D (Essay Type Question)

प्रश्न 31. हड़प्पा सभ्यता एक विशाल सभ्यता थी। यह एक नगरीय सभ्यता थी। इसमें अनेक नगरों का विकास हुआ था। इस सभ्यता के कुछ अति महत्वपूर्ण स्थलों का वर्णन इस प्रकार है-

(i) हड़प्पा-इस सभ्यता का खोजा गया सबसे प्रथम स्थल हड़प्पा था जो वर्तमान में पाकिस्तान के मोटेगुमरी नामक जिले में स्थित है। यह रावी नदी के तट पर स्थित है। इसकी खोज सन् 1921 ई० में दयाराम साहनी ने की थी।

(ii) मोहनजोदड़ो-इस सभ्यता का दूसरा अति महत्वपूर्ण स्थल मोहनजोदड़ो है। इसकी खोज 1922 ई. में राखल दास बनर्जी ने की थी। मोहनजोदड़ों का शाब्दिक अर्थ 'मृतकों का टीला' है। यह स्थल सिंधु नदी के किनारे स्थित है। इस स्थल से कांसे की बनी नृतंकी की मूर्ति, विशाल स्नानागार, अन्नागार के साक्ष्य मिले हैं।

Download from www.MsEducationTv.com

(iii) लोथल-यह हड़प्पा स्थल वर्तमान में गुजरात में भोगवा नदी के तट पर स्थित है। इस स्थल से बंदरगाह के प्रमाण प्राप्त हुए है जिसे समुद्री व्यापार के लिए प्रयोग किया जाता था।

(iv) कालीबंगा – यह स्थल राजस्थान में स्थित है। इस स्थल से काले रंग की चूड़ियों के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं अतः इस स्थल का नाम कालीबंगा रखा गया। इस स्थल से जुते हुए खेत का साक्ष्यभी प्राप्त हुआ है।

(v) बनावली-यह स्थल हरियाणा राज्य में स्थित है। इस स्थान से मिट्‌टी से बने हल के प्रतिरूप प्राप्त हुए हैजिससे इस सभ्यता की कृषि प्रणाली का पता लगता है।

(vi) शोर्तुघई- यह स्थल अफगानिस्तान में स्थित है। इस स्थल के नहरों के कुछ अवशेष मिले है।

(vii)धौलावीरा- यह स्थल गुजरात में स्थित है। इसका शाब्दिक अर्थ सफेद कुआं होता है। इस स्थान से जलाशय के प्रमाण प्राप्त हुए हैं।

इसके अतिरिक्त राखीगढ़ी, नागेश्वर, बालाकोट आदि भी इस सभ्यता के महत्वपूर्ण स्थल थे।

Harappan civilization was a huge civilization. It was an urban civilization. Many cities were developed in it. Description of some of the most important places of this civilization are as follows-

(i) Harappa- The first site of this civilization discovered was Harappa, which is currently located in a district called Motegumri of Pakistan. It is situated on the banks of river Ravi. It was discovered by Dayaram Sahni in 1921.

(ii) Mohenjodaro The second most important site of this civilization is Mohenjodaro. It was discovered by Rakhal Das Banerjee in 1922 AD. The literal meaning of Mohenjodaro is 'mound of the dead'. This place is situated on the banks of Indus river. Evidence of a bronze statue of a dancer, a huge bathroom and a granary have been found from this site.

Download from www.MsEducationTv.com

(ii) Lothal- This Harappan site is currently situated on the banks of Bhogava river in Gujarat. from this place Evidence has been found of a port which was used for maritime trade.

(iv) Kalibanga: This place is situated in Rajasthan. Evidence of black bangles was found from this site -

Hence this place was named Kalibanga. Evidence of plowed fields has also been found from this site.

(v) Banawali -This place is situated in Haryana state. From this place, models of plow made of clay have been found, which reveal the agricultural system of this civilization.

(vi) Shortughai- This place is located in Afghanistan. Some remains of canals have been found at this site. (vii) Dholavira: This place is situated in Gujarat. Its literal meaning is white well. Evidence of a reservoir has been found from this place. Apart from this, Rakhigarhi, Nageshwar, Balakot etc. were also important places of this civilization.

अथवा/or

मोहनजोदड़ो में दुर्ग पर हमें ऐसी संरचनाओं के साक्ष्य मिलते हैं जिनका प्रयोग संभवत: विशिष्ट सार्वजनिक प्रयोजनों के लिए किया जाता था। ऐसी संरचनाओं में सबसे महत्त्वपूर्ण संरचना विशाल स्नानागार है। इसकी प्रमुख विशेषताओं का वर्णन इस प्रकार है-

(i) विशाल स्नानागार दुर्ग क्षेत्र में आँगन में बना एक आयताकार जलाशय है जो चारों ओर से एक गलियारे से घिरा है।

(ii) यह 11.88 मीटर लम्बा 7.1 मीटर चौड़ा और 2.45 मीटर गहरा है।

(iii) जलाशय के तल तक जाने के लिए इसके उत्तरी और दक्षिणी भाग में दो सीढ़ियाँ बनी हुई हैं।

(iv) जलाशय के किनारों पर ईंटों को जमाकर तथा जिप्सम के गारे के प्रयोग से इसे जलबद्ध किया गया था।

Download from www.MsEducationTv.com

(iv) इसके तीनों ओर कक्ष बने हुए थे जिनमें से एक में बड़ा कुआँ था। जलाशय से पानी एक बड़े नाले में बह जाता था।

(v) विशाल स्नानागार के उत्तर दिशा में अपेक्षाकृत 8 छोटे-छोटे स्नानागार भी मिले है।

इस बात का स्पष्ट संकेत मिलता है कि इसका प्रयोग किसी प्रकार के विशेष आनुष्ठानिक स्नान के लिए किया जाता था।

At the fort at Mohenjodaro we find evidence of structures that were probably used for specific public purposes. The most important structure among such structures is the Great Bath. his

The main features are described as follows-

(i) The Great Bath is a rectangular reservoir built in the courtyard of the fort area which is surrounded by a corridor on all sides.

(ii) It is 11.88 meters long, 7.1 meters wide and 2.45 meters deep.

ii) To reach the bottom of the reservoir, there are two stairs in its northern and southern parts.

(iv) Had gone. The reservoir was watered by placing bricks on its banks and using gypsum mortar.

(iv) It had three more chambers, one of which had a big well. Water from the reservoir flowed into a big drain.

(v) Relatively 8 smaller bathrooms have also been found in the northern direction of the huge bathhouse.

There is a clear indication that it was used for some kind of special ritual bath.

प्रश्न 32. सूफी मत के धार्मिक विश्वास बहुत ही सरल और स्पष्ट थे। ये सरल आदर्श ही इनके आचरण का आधार बने। सूफी मत के मुख्य धार्मिक विश्वासों और आचारों का वर्णन इस प्रकार है-

Download from www.MsEducationTv.com

(1) गुरू अथवा पीर का महत्व- भक्ति संतों के समान सूफी साधकों ने भी गुरु अथवा पौर का महत्त्व स्वीकारकिया है। सूफी संत पूर्ण मानव को अपना गुरू मानते हैं। उनके अनुसार बिना गुरु के मानव कुछ भी नहीं कर सकता है।

(2) परमात्मा के सम्बंध में विचार- परमात्मा के संबंध में सूफी साधकों का विचार था कि परमात्मा एक है। उनका मानना था कि वह सर्वशक्तिमान, निरपेक्ष, अगोचर एवं अद्वितीय है। परमात्मा ही परम सत्य है। संसार के सभी लोग उसकी संतान हैं।

(3) जियारत को महत्व देना- सूफीवाद में त्रियारत को बहुत महत्त्व दिया जाता है। इस अवसर पर बरकत को कामना की जाती है। पिछले सात सौ सालों में विभिन्न वर्गों एवं समुदायों के लोग पाँच महान चिश्ती संतों की दरगाह पर अपनी आस्था प्रकट करते रहे हैं।

(4) नाच एवं संगीत को महत्व- सूफी संत जिक्र (ईश्वर का नाम-जप) या फिर समायानी आध्यात्मिक संगीतकी महाफिल के द्वारा ईश्वर की उपासना में विश्वास रखते थे। नाच और संगीत जियारत का हिस्सा होते थे।

(5) आत्मा एवं जगत सम्बंधी विचार- आत्मा की सूफी साधक ईश्वर का अंग मानते है तथा ईश्वर ही इस जगत का निर्माता है। सभी पदार्थ उसी से पैदा होते हैं और अंत में उसी में समा जाते हैं।

(6) लक्ष्य प्राप्ति के साधन परमात्मा के साथ एकत्व प्राप्त करना सूफी संतों का परम लक्ष्य है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के अनेक साधन है जैसे प्रायश्चित, धर्म परायणता, धैर्य, भय, संतुष्टि, आशा, संयम आदि। सूफी संतों का विचार है कि हमें सच्चे मन से परमात्मा की भक्ति करनी चाहिए। यदि मनुष्य परमात्मा में लीन हो जाए तो वह शीघ्र ही अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है।

Download from www.MsEducationTv.com

(7) मानवता की भलाई सूफी मानवतावाद में विश्वास रखते हैं। उनका विचार है कि ईश्वर को पाने के लिए मनुष्य मात्र से प्रेम करना आवश्यक है। सूफी संत सेवा तथा जरूरतमंद लोगों की सहायता करना प्रभु भक्ति करने के समान है। इसी उद्देश्य से शेख निजामुद्दीन औलिया की खानकाह में एक सामुदायिक लंगर चलाई जाती थी, यहाँ पर सभी वर्गों के लोग भोजन करते थे।

(8) सांसारिक पदार्थों से मोह न रखना- सूफी साधक सांसारिक पदार्थों से कोई मोह नहीं रखते हैं। उदाहरण के लिए शेख निजामुद्दीन औलिया ने एक स्थानीय शासक की शाही भेंट अस्वीकार कर दी थी और कहा कि इस जमीन, खेत और बगीचे का मुझे क्या करना है? हमारे कोई भी आध्यात्मिक गुरु ने इस तरह का काम नहीं किया।'

(9) सदाचारिता पर बल सूफी मत सदाचारिता पर बल देता है। सूफी साधकों के अनुसार मनुष्य को बाहरी आडम्बरों से दूर रहना चाहिए। उसे भोग विलास से दूर रहना चाहिए। मनुष्य को सादा जीवन व्यतीत करना चाहिए तथा अपने नैतिक स्तर को ऊंचा करना चाहिए।

The religious beliefs of Sufism were very simple and clear. These simple ideals became the basis of his conduct. The main religious beliefs and conducts of Sufism are described as follows:

(1) Importance of Guru or Pir: Like Bhakti saints, Sufi seekers have also accepted the importance of Guru or Pir. Sufi saints consider a perfect human being as their guru. According to him, a human cannot do anything without a Guru.

(2) Thoughts regarding God- Sufi seekers thought about God that God is one. He believed that he is omnipotent, absolute, invisible and unique. God is the ultimate truth. World

All the people are his children.

(3) Giving importance to Ziyarat- Triyarat is given great importance in Sufism. Blessings are wished on this occasion. In the last seven hundred years, people

Download from www.MsEducationTv.com

of different classes and communities have worshiped the five great Chishti saints.

They have been expressing their faith at the Dargah.

(4) Importance of dance and music – Sufi saints believed in worshiping God through Zikr (chanting the name of God) or Sama i.e. spiritual music. Dance and music were part of Ziyarat. (5) Ideas related to soul and the world: Sufi seekers consider the soul to be a part of God and God is the creator of this world. All substances arise from Him and ultimately merge into Him.

(6) Means to achieve the goal: Attaining unity with God is the ultimate goal of Sufi saints. There are many means to achieve this goal like repentance, piety, patience, fear, satisfaction, hope, restraint etc. The Sufi saint believes that we should worship God with a true heart. If a man becomes absorbed in God, he soon achieves his goal.

(7) Sufis believe in humanism. His view is that to attain God it is necessary to love human beings. Serving Sufi saints and helping needy people is equivalent to doing devotion to God. For this purpose, a community langar was run in the Khanqah of Sheikh Nizamuddin Auliya, where people of all sections used to eat food.

(8) Do not have any attachment to worldly things – Sufi seekers do not have any attachment to worldly things. For example, Sheikh Nizamuddin Auliya rejected a royal gift from a local ruler and said, "What am I to do with this land, fields and gardens? None of our spiritual leaders did anything like this."

(9) Emphasis on virtue: Sufism emphasizes on virtue. According to Sufi practitioners, man should stay away from external ostentation. He should stay away from pleasures and luxuries. Man should live a simple life and raise his moral level.

अथवा/or

अलवार, नयनार और सूफी संत जन साधारण के बीच काफी लोकप्रिय होते थे। शासक की तुलना में समाज पर उनकी पकड़ काफी अच्छी होती थी। शासकों की हमेशा यह इच्छा रहती थी कि वे इन संत फकीरों का विश्वास जीत लें। इससे जनता के साथ जुड़ने में आसानी रहेगी तथा उन्हें जन समर्थन मिलने

Download from www.MsEducationTv.com

की उम्मीद रहेगी। तमिलनाडु क्षेत्र में शासकों ने अलवार नयनार संतों को हर प्रकार का सहयोग दिया। इन शासकों ने उन्हें अनुदान दिए तथा मंदिरों का निर्माण करवाया। चोल शासकों ने चिदम्बरम, तंजावुर तथा गगकोडचोलपुरम में विशाल शिव मंदिरों का निर्माण करवाया। इन मंदिरों में शिव की कांस्य प्रतिमाओं को बड़े स्तर पर स्थापित किया। अलवार और नयनार संत वेल्लाल कृषकों व सामान्य जनता में ही सम्मानित नहीं थे, बल्कि शासकों ने भी उनका समर्थन पारे का प्रयास किया। सुन्दर मंदिरों का निर्माण व उनमें मूर्तियों (कास्य, लकड़ी, पत्थरव अन्य धातुओं) की स्थापना के अतिरिक्त शासक वर्ग ने संत कवियों के गीतों व विचारों को भी महत्त्व दिया। उन्होंने इन संत कवियों को प्रतिमाओं को भी देवताओं के साथ लगवाई। इन संतों के उपदेशों व भजनों का संग्रह करवाकर शासकों ने एक तमिल ग्रन्थ 'तवरम' का संकलन भी किया।

इसी तरह से सूफी संतों को भी शासकों ने विभिन्न तरह के अनुदान दिए। अजमेर में मुईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह तो शासक व शाही परिवार के सदस्यों की पहली पसंद बन गई थी। मुहम्मद तुगलक स्वयं निजामुद्दीन औलिया की खानकाह पर भी निरन्तर जाया करता था। मुगल काल में अकबर ने अपने जीवन में अजमेर की 14 बार यात्रा की। उसने इस दरगाह को विभिन्न चीजें दीं। अकबर ने फतेहपुर सीकरी में सलीम चिश्ती से न केवल भेंट की. बल्कि उससे प्रभावित होकर अपनी राजधानी भी आगरा से बदलकर फतेहपुर सीकरी कर दी। अतः स्पष्ट है कि शासक इन संत फकीरों के माध्यम से समाज से जुड़ना चाहते थे। इसी उद्देश्य से वे संतों के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करते थे और समाज पर भी इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ता था।

Alwar, Nayanars and Sufi saints were very popular among the common people. In comparison to the ruler, his hold on the society was much better. The rulers always had a desire to win the trust of these saint fakirs. This will make it easier to connect with the public and they will be expected to get public support. The rulers in Tamil Nadu region provided every kind of support to the

Download from www.MsEducationTv.com

Alwar Nayanar saints. These rulers gave them grants and got temples built. The Chola rulers built huge Shiva temples at Chidambaram, Thanjavur and Gagkodacholapuram. Bronze statues of Shiva were installed on a large scale in these temples. The Alvar and Nayanar saints Vellala were not only respected among the farmers and the general public, but the rulers also tried to support them. Apart from building beautiful temples and installing statues (of bronze, wood, stone and other metals) in them, the ruling class also gave importance to the songs and thoughts of saint poets. He also installed the statues of these saint poets along with the deities. By collecting the sermons and hymns of these saints, the rulers also compiled a Tamil book, Tavaram.

Similarly, the rulers also gave various types of grants to Sufi saints. The Dargah of Moinuddin Chishti in Ajmer had become the first choice of the ruler and members of the royal family. Muhammad Tughlaq himself used to regularly visit the Khanqah of Nizamuddin Auliya. Akbar visited Ajmer 14 times in his life during the Mughal period. He gave various things to this Dargah. Akbar not only met Salim Chishti in Fatehpur Sikri. In fact, influenced by it, he also changed his capital from Agra to Fatehpur Sikri. Hence it is clear that the rulers wanted to connect with the society through these saint fakirs. With this purpose, they used to express their devotion towards the saints and it also had a positive impact on the society.

प्रश्न 33. 1857 के घटनाक्रम को निर्धारित करने में धार्मिक विश्वासों की भूमिका अति महत्त्वपूर्ण थी। इस क्रांति के लिएधार्मिक विश्वासों ने अपनी भूमिका निभाई उनका वर्णन इस प्रकार है-

(1) सामान्य सेवा भर्ती अधिनियम- गवर्नर जनरल लॉर्ड कॅनिंग ने 1856 ई०में 'सामान्य सेवा भर्ती अधिनियम बनाया था। इस अधिनियम के अनुसार भारतीय सैनिकों को युद्ध के लिए भारत से बाहर भी भेजा जा सकता था जिसे भारतीय सैनिक अपने धर्म के विरुद्ध मानते थे। इस अधिनियम से भारतीय सैनिकों से भारी असंतोष था।

(2) उत्तराधिकार कानून-उत्तराधिकार कानून (लेक्स लोसी एक्ट) 1850 ई. में बनाया गया था। इस कानून के अनुसार यदि कोई व्यक्ति अन्य धर्म अपनाता

Download from www.MsEducationTv.com

है तो वह फिर भी अपनी पैतृक सम्पत्ति का उत्तराधिकारी बना रह सकता था। यह कानून वास्तव में भारत में ईसाई धर्म के प्रचार हेतू बनाया गया था। भारतीय इस कानून को अपने धर्म के लिए खतरा मान रहे थे।

(3) अंग्रेजी शिक्षा और पाश्चात्य संस्कृति का प्रचार- सामान्य लोग भी अंग्रेजी सरकार को संदेह की दृष्टि से देख रहे थे। उन्हें यह लग रहा था कि सरकार अंग्रेजी शिक्षा और पाश्चात्य संस्कृति का प्रचार-प्रसार करके भारत में ईसाई धर्म को बढ़ावा दे रही है। उनका संदेह गलत भी नहीं था क्योंकि अधिकारी वर्ग ईसाई पादरियों को धर्म प्रचार की छूट और प्रोत्साहन दे रहे थे। सैनिकों को धर्म परिवर्तन के लिए लालच भी दिया जा रहा था।

(4) अंग्रेजों की सामाजिक सुधार नीतियाँ- गवर्नर जनरल लॉर्ड विलियम बेंटिक के नेतृत्व में ब्रिटिश सरकार में भारतीय समाज को सुधारने के लिए खास तरह की नीतियाँ लागू की थी। अंग्रेजों ने सती प्रथा को समाप्त करने और हिंदू विधवा विवाह को वैधता देने के लिए कानून बनाए थे। भारतीय इन कानूनों को अपने धर्म के विरूद्ध मान रहे थे। भारतीयों में अंग्रेजों की सामाजिक सुधार नीतियों के विरुद्ध भारी असंतोष था।

(5) चर्बी वाले कारतूस भारतीय सैनिकों को प्रयोग के लिए चर्बी वाले कारतूस देना इस क्रांति का तात्कालिक कारण था। सैनिकों को यह अनुभव हुआ कि अंग्रेज इन कारतूसों के द्वारा भारतीयों का धर्म भ्रष्ट करना चाहते हैं। इसलिए उन्होंने इन चर्बी वाले कारतूसों का प्रयोग करने से इंकार कर दिया। जब अंग्रेजों ने ये कारतूस प्रयोग करने के लिए विवश किया तो उन्होंने क्रांति का बिगुल बजा दिया।

(6) हिंदू धर्मग्रन्थों की निंदा- ईसाई धर्म प्रचारक हिंदू धर्म ग्रन्थों की निंदा करते थे। इस बात को भारतीय किसी भी कीमत पर सहन नहीं कर सकते थे तथा

Download from www.MsEducationTv.com

उन्होंने अपने धर्म की रक्षा और सम्मान के लिए अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध क्रांति का रास्ता अपनाना बेहतर लगा।

इस प्रकार स्पष्ट है कि उपर्युक्त कारणों से भारतीयों की धार्मिक भावनाएं आहत हुई थी तथा 1857 ई. के घटनाक्रम के निर्धारण में धार्मिक विश्वासों की भूमिका काफी महत्त्वपूर्ण थी।

The role of religious beliefs was very important in determining the events of 1857. Religious beliefs played their role in this revolution and their description is as follows-

(1) General Service Recruitment Act- Governor General Lord Canning made the General Service Recruitment Act in 1856. According to this Act, Indian soldiers could also be sent outside India for war, which Indian soldiers considered against their religion. There was huge dissatisfaction among the Indian soldiers with this act.

(2) Succession Law- Succession Law (Lex Loci Act) was made in 1850 AD. According to this law, if a person converted to another religion, he could still continue to inherit his ancestral property. This law was actually made for the promotion of Christianity in India. Indians were considering this law as a threat to their religion.

(3) Promotion of English education and western culture. Common people were also looking at the British government with suspicion. They felt that the government was promoting Christianity in India by promoting English education and Western culture. His suspicion was not wrong because the officers were giving freedom and encouragement to the Christian priests to preach religion and the soldiers were also being lured to convert to religion.

(4) Social reform policies of the British - Under the leadership of Governor General Lord William Bentinck, the British government implemented special policies to improve the Indian society. The British enacted laws to end the practice of Sati and legalize Hindu widow remarriage. Indians were considering these laws as against their religion. There was huge dissatisfaction among Indians against the social reform policies of the British.

Download from www.MsEducationTv.com

(5) Providing greased cartridges to the Indian soldiers for use was the immediate cause of this revolution. The soldiers realized that the British wanted to corrupt the religion of Indians through these cartridges. Therefore he refused to use these greased cartridges. When the British forced them to use this cartridge, they sounded the bugle of revolution.

(6) Condemnation of Hindu religious texts: Christian preachers used to condemn Hindu religious texts. Indians could not tolerate this at any cost and they found it better to adopt the path of revolution against the British government to protect and respect their religion.

Thus, it is clear that due to the above mentioned reasons, the religious sentiments of Indians were hurt and the role of religious beliefs was very important in determining the events of 1857 AD.

अथवा/or

विद्रोही नेताओं की घोषणाओं, सिपाहियों की कुछ अर्जियों तथा नेताओं के कुछ पत्रों से हमें विद्रोहियों की सोच के बारे में कुछ जानकारी मिलती है, जो इस प्रकार है-

(i) वे अंग्रेजी सत्ता को उत्पीड़क, निरंकुश और षड्यंत्र कारीमान रहे थे इसलिए उन्होंने ब्रिटिश राज के विरुद्ध सभी भारतीय सामाजिक समूहों को एकजुट होने का आह्वान किया।वे इस राज से सम्बन्धित प्रत्येक चीज को खारिज कर रहे थे।

(ii) विद्रोहियों के घोषणाओं से ऐसा लगता है कि वे भारत के सभी सामाजिक समूहों में एकता चाहते थे। विशेष तौर पर उन्होंने हिन्दू-मुस्लिम एकता पर जोर दिया। लाभ की दृष्टि से युद्ध को दोनों समुदायों के लिए एक समान बताया। बहादुरशाह जफर की घोषणा में मुहम्मद और महावीर दोनों की दुहाई के साथ संघर्ष में भाग लेने की अपील की गई।

(iii) वे वैकल्पिक सत्ता के रूप में अंग्रेजों का राज समाप्त करके 18वीं सदी से पहले की मुगलकालीन व्यवस्था की ओर ही वापिस लौटना चाहते थे।

Download from www.MsEducationTv.com

विभिन्न सामाजिक समूहों की दृष्टि में अंतर -उपरोक्त बातों से यह अर्थ नहीं निकालना चाहिए कि सभी विद्रोहियों की सोच बिल्कुल एक जैसी थी। वास्तव में अलग-अलग सामाजिक समूहों की दृष्टि में अन्तर था, उदाहरण के लिए-

(i) सैनिक चाहते थे कि उन्हें पर्याप्त वेतन, पदोन्नति तथा अन्य सुविधाएँ यूरोपीय सिपाहियों की तरह ही प्राप्त

हो वे अपने आत्मसम्मान व भावनाओं की भी रक्षा चाहते थे। वे अंग्रेजों के विदेशी सत्ता को खत्म करके अपने पुराने शासकों की सत्ता की पुनः स्थापना चाहते थे।

(ii) अपदस्थ शासक विद्रोह के नेता थे परन्तु इनमें से अधिकांश अपनी रजवाड़ा शाही को ही पुनः स्थापित करने के लिए लड़ रहे थे। इसलिए उन्होंने पुराने ढर्रे पर ही दरबार लगाए और दरबारी नियुक्तियाँ कीं।

(iii) ताल्लुकदार अथवा जमींदार अपनी जमींदारियों और सामाजिक हैसियत के लिए संघर्ष में कूदे थे। वे अपनी जमीनों को पुनः प्राप्त करना चाहते थे जो अंग्रेजों ने उनसे छीनकर किसानों को दे दी थी।

(iv) किसान अंग्रेजों की भू-राजस्व व्यवस्था से परेशान था। इसमें कोई लचीलापन नहीं था। राजस्व का निर्धारण बहुत ऊँची दर पर किया जाता था और उसकी वसूली ‘डन्डे’ के साथ की जाती थी। फसल खराब होने पर भी सरकार की ओर से कोई दयाभाव नहींथा। इसी कारण वह साहूकारी के चंगुल में फँसता था। यही कारण था कि अंग्रेजी राज के साथ-साथ वह अन्य उत्पीड़कों को भी खत्म करना चाहता था। उदाहरण के लिए उन्होंने कई स्थानों पर सूदखोरों के बही खाते जला दिए और उनके घरों में तोड़-फोड़ की।

From the announcements of the rebel leaders, some applications of the soldiers and some letters of the leaders, we get some information about the thinking of the rebels, which is as follows -

Download from www.MsEducationTv.com

(i) He considered the British rule as oppressive, autocratic and conspiratorial, hence he called upon all Indian social groups to unite against the British Raj. They were rejecting everything related to this kingdom.

(ii) From the declarations of the rebels it appears that they wanted unity among all the social groups of India. Especially he emphasized on Hindu-Muslim unity. From the point of view of benefits, the war was said to be equal for both communities. In the declaration of Bahadurshah Zafar, both Muhammad and Mahavir An appeal was made to participate in the struggle with Duhai.

(iii) They wanted to end the British rule as an alternative power and return to the pre-18th century Mughal system.

Difference in viewpoint of different social groups From the above points it should not be meant that the thinking of all the rebels was exactly the same. In fact, there were differences in the views of different social groups, for example-

(i) The soldiers wanted that they should get adequate salary, promotion and other facilities like the European soldiers. They also wanted to protect their self-respect and feelings. They wanted to end the foreign rule of the British and re-establish the power of their old rulers.

(ii) The deposed rulers were the leaders of the rebellion but most of them were fighting to re-establish their princely state. Therefore, he held courts on the old pattern and made court appointments.

(iii) Talukdars or landlords jumped into the struggle for their land holdings and social status. They wanted to reclaim their lands which the British had snatched away from them and given them to the farmers.

(iv) The farmer was troubled by the land revenue system of the British. There was no flexibility in it. Revenue was assessed at a very high rate and was collected with Unda. There was no mercy from the government even when the crop failed. For this reason he used to get trapped in the clutches of moneylenders. This was the reason why along with the British Raj, he also wanted to eliminate other oppressors. For example, at many places they burned the account books of moneylenders and vandalized their houses.

प्रश्न 34. **मानचित्र कार्य**

(i) मोहनजोदड़ो

(ii) सांची

Download from www.MsEducationTv.com

(iii) मास्की

(iv) बैरकपुर

(v) चंपारण

Question34. **Map Work**

(i) Mohenjodaro

(ii) Sanchi

(iii) Masky

(iv) Barrackpur

(v) Champaran

Download from www.MsEducationTv.com